आलोक अग्रवाल

... तो एक चॉकलेट कम कर दो!

"जाता हूँ माँ।" कालू ने घर से निकलते हुए माँ से कहा।

"अच्छा बेटा, अपना ख्याल रखना।" माँ ने खाट पर पड़े-पड़े खाँसते हुए कहा।

कालू बदरी के घर पहुँचा। फिर दोनों रेल्वे स्टेशन की ओर चल दिए। थोड़ी देर बाद पठानकोट एक्सप्रेस आई। कालू और बदरी दोनों स्लीपर क्लास के अलग-अलग डिब्बों में चढ़ गए।

ट्रेन चलने लगी तो कालू ने अपनी शर्ट उतारी और उसी से डिब्बे का कचरा साफ करते हुए आगे बढ़ने लगा। पिछले दिन कालू बदरी के साथ आया था। उसने देखा कि स्लीपर क्लास के डिब्बे में यात्रियों के बैठने के लिए कई अलग-अलग हिस्से होते हैं। कूड़ा इकट्ठा करते और उसे ढकेलते हुए वह पहले हिस्से में पहुँचा ही था कि एक यात्री ने चिल्लाकर कहा, "चल आगे बढ़। चले आते हैं भीख माँगने। बाप दारू पिए पड़ा होगा कहीं, भेज दिया बच्चे को धँधा करने।" आठ साल के कालू का मन सिहर उठा। आज उसका पहला दिन था पैसा माँगने का। उसे याद आया। बाबूजी मज़दूरी करते थे। वह, उसकी दो छोटी बहनें रानी और गुड़िया, माँ, बाबूजी सभी अच्छे से रहते थे। दो महीने पहले मज़दूरी करते समय, बाबू जी मकान की छत गिरने से खतम हो गए। उसके बाद जैसे मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। माँ ने जैसे-तैसे दो घरों में झाड़ू-पौंछे का काम सम्भाला। पिछले चार दिनों से माँ को तेज़ बुखार, खाँसी है। वह काम पर नहीं जा पा रही है। अब तो घर में खाना बनाने को भी कुछ नहीं बचा है।

तभी कालू को ध्यान आया कि उसके मोहल्ले के दोस्त बदरी ने उसे बताया था कि वह रेल के डिब्बे में कचरा साफकर पैसा लाता है। बदरी के माँ-बाप बचपन में मर गए थे। वह मौसी के पास रहता है।

घर में जब चूल्हा बन्द हो गया तो कालू ने बदरी से कहा कि वह भी उसके साथ चलेगा। कल कालू बदरी के साथ रहा और उसने उसे कचरा साफ करते और पैसा माँगते देखा।

आज वह खुद काम कर पैसा माँगने निकला था।

"चल आगे बढ़।" चाय वाले ने कालू का डाँटा।

कालू अगले हिस्से में पहुँचा और बर्थ के नीचे घुसकर अपनी शर्ट से कचरा इकट्ठा करने लगा। उसे देखकर वहाँ बैठे एक यात्री ने कहा, "लालू ने रेल तो सुधार दी, बस एक यही कमी रह गई है। इन भिखमँगों को और बन्द कर देना चाहिए।"

"पर क्या दिक्कत है साहब, कम से कम सस्ते में डिब्बा तो साफ हो जाता है।" दूसरा बोला।

"सस्ता नहीं भाई! बहुत महँगा पड़ता है यह। पूरे चोर होते हैं ये साले।" तीसरे ने पहले का समर्थन करते हुए कहा।

कचरा साफ कर कालू ने जब हाथ आगे बढ़ाया तो उनमें से एक ने एक रुपया देकर कहा, "बस, आगे बढ़।" जैसे कि सबकी तरफ से बहुत बड़ी सम्पदा दे दी हो।

कालू ने देखा अगले हिस्से में दो छोटे-भाई खूब खुश होकर खिलौने से खेल रहे हैं। बन्दर की पूँछ में लगी चाभी को मरोड़ने पर वह पेट पर बँधी ढोलक को ज़ोर-ज़ोर से बजाने लगता। कालू का मन किया कि उसके पास भी खिलौने होते तो कितना मज़ा आता। वह कई दिनों से अपनी छोटी बहनों को लाल पहिए वाली खिलौने की कार देने की सोच रहा था।

बच्चे कौतूहल से कालू को देख रहे थे। उनके पिता जी ने कालू को कुछ पैसे दिए।

कालू आगे बढ़ा तो सामने आइसक्रीम वाला खड़ा था। वहाँ बैठे सज्जन ने पूछा, "कैसे दी आइसक्रीम?"

"बारह रुपये की एक ।"

"पाँच दे दो।" कहकर उसने आइसक्रीम ली और पति पत्नी और तीन बच्चे आइसक्रीम खाने लगे। कालू को याद आया कि पिछले साल मोटी माता के मेले में पिताजी ने उन्हें कुल्फी खिलाई थी।

उस हिस्से को साफ कर उसने पैसे के लिए हाथ बढ़ाया तो वही सज्जन अपनी पत्नी से बोले, "कल रात वाला खाना रखा है न। फेंकने से अच्छा है इसे दे दो।"

और पत्नी ने एक छोटी-सी थैली कालू को पकड़ा दी।

कालू आगे बढ़ा तो देखा कि एक छोटा बच्चा चुपचाप एक किताब पढ़ रहा है। उसे आसपास की दुनिया की कोई परवाह न थी। कालू को याद आया कि पिछले साल वह भी तो पहली कक्षा में पढ़ने जाता था। स्कूल में उसे बड़ा मज़ा आता था। बाबूजी माँ से कहते थे कि वे उसे पढ़ाकर मास्टर बनाएँगे। बाबूजी अपनी न पढ़ पाने की कसक को इस तरह पूरा करना चाहते थे। बाबूजी के जाने के बाद कालू को स्कूल छोड़ना पड़ा। इतने में कुछ और यात्रियों ने कालू के हाथ में कुछ पैसे डाल दिए।

आगे बढ़ते-बढ़ते वह एक हिस्से में पहुँचा जहाँ कुछ लोग बीच में अटैची रखकर पत्ते खेल रहे थे। जैसे ही कचरा निकालने के लिए वह बर्थ के नीचे झुका, उनमें से एक ज़ोर से लात मारते हुए चिल्लाया, "चल भाग यहाँ से। भिखमँगा कहीं का।" कालू एक तरफ लुड़क गया। वह बुरी तरह से डर गया था। उसका मन ज़ोर से रोने को हुआ।

फिर कुछ हिम्मत कर वह अगले हिस्से में कचरा निकालने लगा। उसने देखा कोने में बैठी सफेद बालों वाली बूढ़ी महिला बड़े प्यार से उसे देख रही है। कालू की हिम्मत बढ़ी और उसने जल्दी-जल्दी सारा कचरा निकाल दिया। जब उसने पैसे के लिए हाथ बढ़ाया तो उस महिला ने अपने पर्स से 10 रु. का नोट निकालकर उसकी हथेली में रख दिया। दस रुपए देख कालू चौंक गया। महिला ने कालू के सिर पर हाथ फेरकर कहा, "बेटा, रख लो।" जैसे कह रही हो कि इससे ज़्यादा वह उसके लिए कुछ नहीं कर सकती।

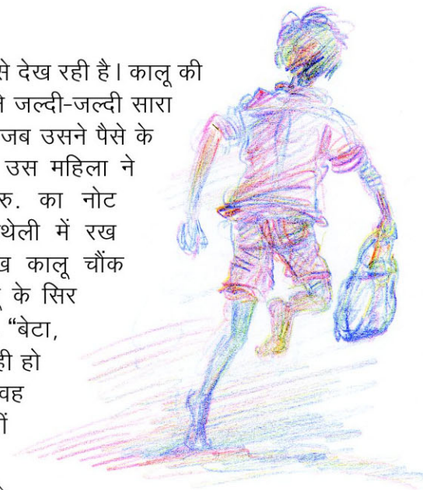

रेलगाड़ी धीरे होने लगी। बनापुरा आ रहा था। यहाँ कालू को उतरना था और तीन घण्टे बाद लौटने वाली जनता एक्सप्रेस पकड़नी थी। गाड़ी रुकने पर कालू उतरकर सामने प्लेटफार्म पर बैठ गया। इतने में दूसरे डिब्बे से उतरकर बदरी भी आ गया और बोला, "चल, बाहर चलकर कुछ खाकर आते हैं।"

"नहीं, मुझे भूख नहीं है। तू खाकर आजा।" कालू बोला। पैसे बचाने के लिए वह कोई खर्चा नहीं करना चाहता था।

बदरी चला गया। कालू को ज़ोर की भूख लगी थी। उसने अपनी निक्कर की जेब से खाने की थैली निकाली। सब्ज़ी खराब होकर बुरी गन्ध मार रही थी। कालू ने सब्ज़ी को फेंका और तीन सूखी पूरियों को जल्दी-जल्दी खा गया। पास के नल से पानी पिया और वापस वहीं आकर बैठ गया। थकान इतनी थी कि पता ही न चला कब उसे नींद आ गई। अचानक आँख खुली तो देखा कि बदरी हिलाहिलाकर उसे जगा रहा है, "चल उठ, जनता आने वाली है।"

जनता एक्सप्रेस आते ही कालू और बदरी अलग-अलग डिब्बों में चढ़ गए। कालू ने फिर से अपनी शर्ट से कचरा साफ करके पैसा माँगना शुरू कर दिया। एक डिब्बे से दूसरे, दूसरे से तीसरे में पहुँचते-पहुँचते उसका स्टेशन खिरकिया आ गया। कालू गाड़ी से उतरा। ज़ोर से अपनी शर्ट को झाड़कर पहना और सामने की बैंच पर बैठ गया। बदरी यह कहते हुए निकल गया कि उसे जल्दी जाना है।

कालू दिन भर की कमाई गिनने लगा। कुल 32 रुपये मिले थे। उसने इस खज़ाने को सम्भालकर अपनी जेब में भरा ही था कि उसके गाल पर एक ज़ोर का चाँटा पड़ा।

"क्यों बे साले, क्या कर रहा है यहाँ?" हवलदार दहाड़ा।

सहमे हुए कालू ने जेब से 5 रु. निकालकर हवलदार को दे दिए। बदरी ने उसे बताया था कि यदि हवलदार आए तो 5

रु. दे देना। “चल, निकल जा यहाँ से।” हवलदार रुपए जेब में रखते हुए आगे बढ़ गया।

कालू स्टेशन से बाहर आकर सबसे पहले दवाई की दुकान पर गया और माँ के लिए बुखार, खाँसी की दवाई खरीदी। आगे सब्ज़ी वाले से प्याज़ व मिर्ची ली। अगली दुकानवाले को आधा किलो चावल, डेढ़ सौ ग्राम दाल और 1 रु. वाली तीन चॉकलेट देने को कहा।

“कितना हुआ?” उसने दुकानदार से पूछा।

“7 का चावल, 5 की दाल, 3 की चॉकलेट, 15 हुए।” दुकानदार ने जोड़कर बताया।

कालू ने जेब के सारे पैसे गिने – 14 रुपए बचे थे।

“अच्छा, एक चॉकलेट कम कर दो।” कहकर उसने 14 रु. दुकानदार को दे दिए।

दुकान से बाहर आकर कालू का मन खुशी से भर गया। उसकी थकान, गाली-लातों का दर्द सब दूर हो गया था। वह सोचने लगा कि जब वह घर पहुँचेगा तो रानी और गुड़िया दौड़कर उससे चिपट जाएँगी और वह दोनों को एक-एक चॉकलेट देगा। फिर माँ को दवाई देगा। माँ खाना बनाएगी और कितने दिनों बाद सब भर पेट खाना खाएँगे।

कालू ने अपने बड़े होने की ज़िम्मेदारी पूरी की। यह सोचकर उसका सीना गर्व से भर गया। और उसके कदम तेज़ी से बढ़ने लगे घर की ओर!

चलता-फिरता मकान

क्या मज़ा हो अगर चलता फिरता घर हो। कभी बगीचे के पास रहने लगे तो कभी झील के पास। डेनमार्क के कुछ कलाकारों ने अमरीकी वैज्ञानिकों के साथ एक ऐसे ही मकान बनाया है। इस मकान की छह हाइड्रॉलिक टाँगें हैं। इससे वह इधर-उधर घूम सकता है। 10 फुट ऊँचा यह मकान सौर और पवन ऊर्जा से चलता है। उसमें एक हॉल, किचन, टॉयलेट, बिस्तर और स्टोव हैं। साथ में एक कम्प्यूटर भी है जो पैरों पर नियंत्रण रखता है। मकान का यह मॉडल बनाने में कुल 24 लाख रुपए खर्च हुए हैं।

–प्रस्तुतिः रेक्स डी रोज़ारियो

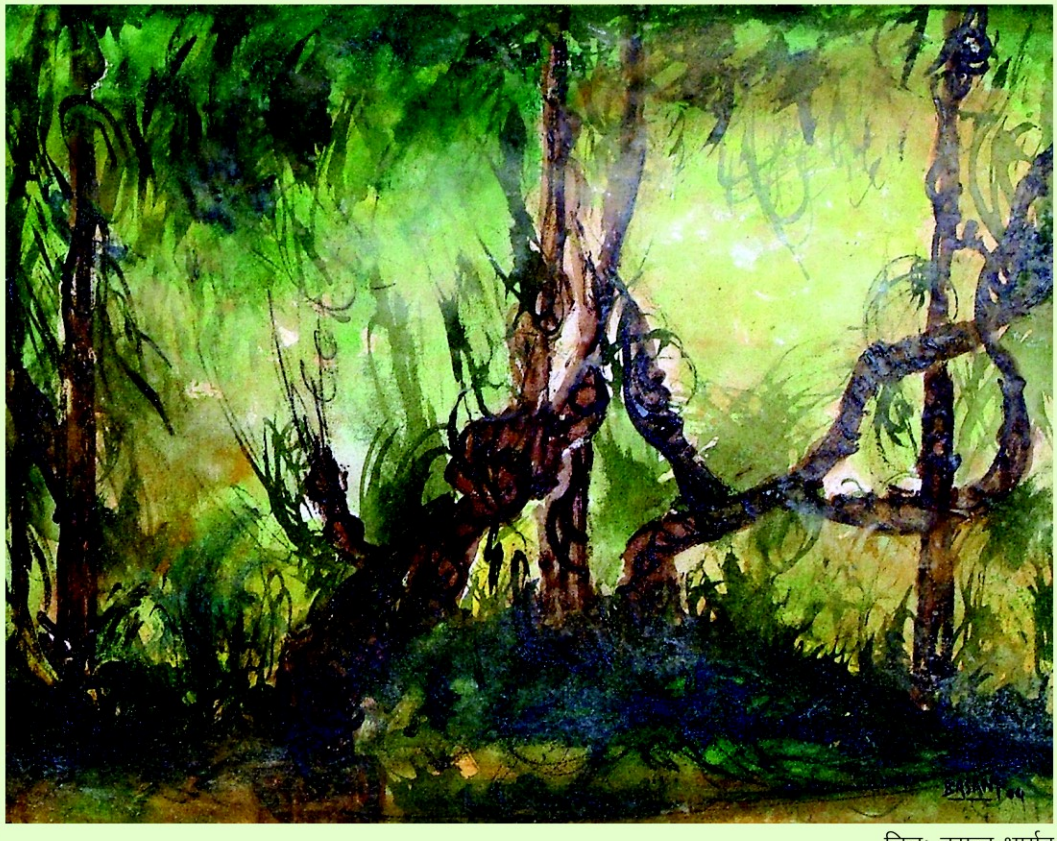

चित्रः बसन्त भार्गव

कई पेड़ थे

कई पेड़ थे
उस वन में।

हर पेड़ पर
एक पक्षी था।

हर पक्षी गाता था

जैसे

किसी अन्य पक्षी से
बिछुड़
गया था।

– रुस्तम